# बिरीय के लोगों के समान पवित्रशास्त्र में खोजबीन करें, प्रभु के वचनों को सीखें और जीवन में लागू करें

(जो लोग बच्चों को पढ़ाते हैं उन्हें पाठ न0 बी 2 बी पढ़ना चाहिये)

**प्रार्थना:** हमारे स्वर्गिय पिता, कृपया हमारी सहायता कीजिये कि हम आपके वचनों की उचित व्याख्या कर सकें एवं उनको अपने हृदय में संचित कर सकें।

ऐसी गतिविधियां चुनिए जो तत्कालिक आवश्यकताओं एवं रीति-रिवाज़ों के अनुकूल हों।

**1. परमेश्वर के वचनों से अपने हृदय और आत्मा को तैयार करें।**

**प्रेरितों के काम 17:10-12** में उन दो बातों को ज्ञात करें जो बिरीया निवासियों ने सुसमाचार सुनकर कीं।

**1 पतरस 1:14-22** में ऐसे तथ्यों को खोजें जिन्हें परमेश्वर हमारे जीवनों में देखना चाहता है।

**1 पतरस 1:24-25** में खोजें कि परमेश्वर का वचन हम में कितने समय तक बना रहेगा?

**2 तीमुथियुस 3:10-17** में खोजें कि संत पौलुस ने तीमुथियुस को क्या लिखा :

- तीमुथियुस ने पौलुस के जीवन में कौन सी बातें देखीं थीं जो उसके लिये बहुमूल्य रहीं? देखें पद 10-13
- तीमुथियुस बचपन से कौन सी बातें जानता था जो यीशु में विश्वास के द्वारा उसका उद्धार निश्चित करती थीं। (देखें पद 14-15)
- पवित्रशास्त्र बाइबल के रचियताओं को कौन प्रेरणा देता था? (देखें पद 16)
- दूसरों की सेवा में बाइबल को किस प्रकार हमें प्रयोग में लाना चाहिये? (फिर देखें पद 16)
- परमेश्वर किस उद्देश्य से चाहता है कि हम उसके वचनों का अध्ययन करें व उनका पालन करें। पद 17

2तीमुथियुस 4:1-5 में युवा चरवाहों के कुछ कर्तव्य खोजें । (पद 2 व 5 देखें)

**2. अपने सहयोगियों के साथ सप्ताह के मध्य करने के लिये कुछ कार्यो की योजना बनाएं**

- विश्वासियों से मिलें और प्रोत्साहित करें कि वे स्वयं बाइबल अध्ययन शुरू करें, जैसे
- छोटे समूहों व परिवारों में मिलकर बाइबल-अध्ययन करना।
- विश्वासियों को प्रोत्साहित करना कि वे आपस में बातें करें कि उन्होंने बाइबल अध्ययन से क्या सीखा।
- विश्वासियों की सहायता करना कि वे प्रति सप्ताह कुछ बाइबल पद याद करें।

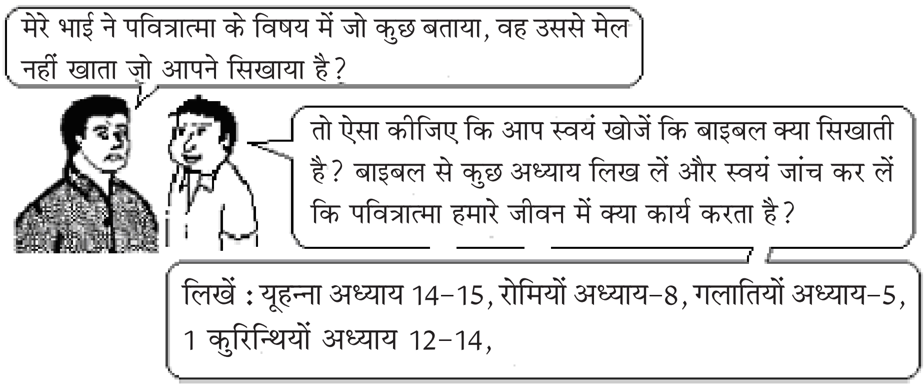

**3. अपने सहयोगियों के साथ आगामी आराधना समय की योजना बनाएं**

**प्रार्थना** करें कि परमेश्वर पवित्रात्मा की सामर्थ में अपने वचन के द्वारा बातचीत करे और सहायता करे कि जो कुछ बताया जाता है उसका पालन भी किया जा सके।

प्रेरितों के काम 17:10-12 पढ़ें।

- पहले सबसे कहें कि वे सुनें और खोजें कि बिरीया निवासियों ने सुसमाचार का कैसा प्रत्युत्तर दिया?
- बताएं कि हमें भी उनके समान परमेश्वर के वचन की खोजबीन करना चाहिये ।

परमेश्वर के वचन को निष्क्रिय भाव से सुनना उचित नहीं पर उसमें खोजबीन करना आवश्यक है। वचन सुनकर तुरन्त जिज्ञासा के साथ स्वयं अध्ययन करना चाहिये। सहायता के लिये कुछ उपाय दिये जा रहे हैं :

जैसा वचन सिखाता है उसे शब्दश: वैसा ही सीखें। मार्गदर्शन के लिये प्रार्थना करने के उपरान्त निम्नलिखित चार बातें कीजिये :

1) बाइबल पाठ में क्या लिखा है उसे जांचें तथा हर शब्द व वाक्यांश पर विचार करें।

2) यदि अर्थ स्पष्ट न हो, तो संदर्भ तथा पाठ-रचना की जांच करें, जैसे :

- यह पाठ्यांश किसे लिखा गया था?
- किसने इसे लिखा था और क्यों लिखा था?
- पद या अध्याय के पहले या बाद में कौन-कौन सी बातें पाई जाती हैं? यह जानने से अर्थ स्पष्ट होगा।
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या है?
- पाठ्यांश कब लिखा गया?(यदि वह यीशु के आने से पहले पुराने नियम के समय में लिखा गया होगा तो उसमें प्राचीन इस्राएल की व्यवस्था संबंधी बातें होंगी, जो संभवत: आपकी नये नियम की कलीसिया में लागू नहीं होंगी)
- फिर आप देखें कि इस पाठ्यांश में परमेश्वर हमसे क्या करने को कहता है?

**आवश्यक बातें**

3) पाठ में से मुख्य सत्य व अनुकरणीय तथ्य निकालिये ।

4) जो अनुकरणीय तथ्य आप निकालते हैं उसे व्यवहारिक रूप दीजिए ।

परमेश्वर का धन्यवाद कीजिये कि हमारे पास बाइबल उपलब्ध है।

विश्वासियों से साक्षी देने व अपनी रिपोर्ट देने के लिये आग्रह कीजिये कि बाइबल अध्ययन द्वारा परमेश्वर ने उन्हें किस प्रकार से आशीषित किया है?

## बाइबल की व्याख्या के विषय में एक नाटिका

**श्री परम्परा:** सावधान, श्री मान नये विश्वासी जी, कुछ क्षण के लिये बाइबल पढता है और उसके पास से उसे हटा लेता है, और कहता है, 'आप अपने आप से बाइबल नहीं समझ सकते हैं, इसके बदले में लीजिए कुछ आधुनिक पुस्तकें पढ़िये।'

**श्री नया विश्वासी:** अपनी कमीज से एक और बाइबल निकाले और कहे, अपनी किताब अपने ही पास रखें। अध यन के द्वारा, आज्ञा पालन के द्वारा और उसे याद करने के द्वारा परमेश्वर का वचन मेरे हृदय में समाया हुआ है, इस कारण मैं जानता हूं कि पवित्रात्मा इन वचनों के द्वारा मुझे वह जीवन देता है जो कोई अन्य पुस्तक नहीं दे सकती है।

**श्री परम्परा:** बाइबल को केवल वे पुरोहित ही समझ सकते हैं जिन्होंने प्राचीन पाण्डुलिपियों को अध्ययन करने के आधुनिक उपाय सीख रखे हैं।

**श्री नया विश्वासी:** हमारे झुण्ड के अगुवे ने हमें सिखाया है कि यदि कोई विश्वासी प्रार्थना करे, वचन का पालन करे तथा बाइबल की व्याख्या करने के सरल उपायों को ध्यान में रखे तो इसे समझ सकता है।

बच्चों से कहें कि जो नाटक और कविताएं उन्होंने तैयार की हैं उन्हें प्रस्तुत करें। बच्चे अपने नाटक के बारे में युवाओं से प्रश्न भी पूछ सकते हैं जो उन्होंने तैयार किये हों।

सप्ताह के मध्य परिवारों में या छोटे समूहों में बाइबल अध्ययन की जो योजनाएं आपने बनाई हों, तो उनकी जानकारी सबको दीजिये।

दो या चार लोगों के समूहों में एकत्रित होकर एक दूसरे की आत्मिक सहायता कीजिये। प्रार्थना कीजिये तथा योजनाओं को पक्का कीजिए तथा एक दूसरे को प्रोत्साहित कीजिये।

प्रभु-भोज विधि मनाने के लिये पढ़ें निर्गमन की पुस्तक अध्याय 12 पद 3, 7-8 तथा 12। प्रथम फसह-पर्व के बारे में संक्षिप्त जानकारी दीजिए तथा इसमें जो नई शिक्षा प्रभु यीशु ने इस प्रभु-भोज विधि को स्थापित करते समय जोड़ी है, उसकी भी जानकारी दीजिए। प्रभु यीशु जो परमेश्वर का मेम्ना है, हमें पाप और मृत्यु से स्वतन्त्रता दिलाने के लिये बलि चढ़ाया गया।

साथ ही 2 तीमुथियुस 3:16-17 मुखाग्र याद करें।